# नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं का संवर्धन

सुमन लता, सहायक प्रोफेसर, मनोहर मैमोरियल शिक्षण महाविद्यालय, फतेहाबाद (हरियाणा) suman29.gill@gmail.com

## शोध सार

व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का योगदान सर्वोपरि रहा है। सर्वांगीण विकास की इस प्रक्रिया में शिक्षा का माध्यम यानी भाषा का अहम रोल है। शिक्षा और भाषा दोनों एक दूसरे के पूरक है।हमारा देश बहुभाषी देश है यहां एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रवेश करते ही भाषाएं बदल जाती है, लेकिन ऐसी कोई भाषा नहीं है जो बहुमत में बोली जाती हो।जैसे–हिंदी उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय हैं, वही हम देखते है कि दक्षिण में तमिल,मलयालम और तेलगू अधिक लोकप्रिय है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में लगभग 122 भाषाएं हैं,जिनमें 22 भाषाएं संविधान की आठवीं सूची में सूचीबद्ध है। हमारी शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सदा–सर्वदा से अनेकता में एकता बनाए रखने की पक्षधर है। किसी भी देश की शिक्षा नीति का विकास में योगदान सर्वोपरि रहा है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य विकास को बढ़ावा देकर उस देश की सभ्यता व सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण के लिए भाषाओं का संवर्द्धन करना है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने व कार्यरूप देने पर बल दिया गया है। अनुच्छेद 4.11 से 4.22 तक भाषा के मुद्दों को बहुभाषावाद और इस दस्तावेज को 'भाषा की शक्ति' शीर्षक के रूप में रखा गया है। देश की नई शिक्षा नीति हिंदी और लुप्तप्राय भारतीय भाषाओं का जीवन देने और भारतीय सभ्यता व सांस्कृतिक विरासत को जीवंत करने का एक सुंदर प्रयास है। नई शिक्षा नीति शिक्षा व्यवस्था में त्रिभाषा फार्मूला को लागू करने की पक्षधर है और बहुभाषी समाज की सभ्यता व संस्कृति को संरक्षित करने का एक अथक प्रयास है। निश्चित ही इसके दूरगामी परिणाम सार्थक व राष्ट्रहित में होगें।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY